काव्य - गीतिका

परिचय

सुशीला जोशी

सम्पादकीय

कवि की भावनाओं का प्रतिबिम्ब या कहा जाये कि विचारों की अभिव्यक्ति ही ‘ काव्य ‘ है ।

कोई कल्पना भाव या विचार मष्तिक के किसी कोने से कागज पर उतरता है तो वास्तव में वह अपने आसपास के जीवन , प्रेम –विरह , प्रकृति सुन्दरता , दिली भावनाओं , को ही चित्रित करता है ।

मित्रों हम सभी के लिए ये एक हर्ष की बात है कि हमारी website साहित्यकारों रचनाकारों के विकास और सम्मान के लिए प्रतिबद्ध है ।इसी दिशा में सभी नए और पुराने रचनाकारों की रचनाएँ प्रतिदिन website पर प्रकाशित कर उनकी भावनाओं को साहित्य प्रेमी पाठकों तक पहुचाया जाता है।

साहित्य साधना की दिशा में एक और कदम बढ़ाते हुए www.kavyasagar.com साहित्यकारों के संग्रह प्रकाशन को न्यूनतम लगत मात्र में E book का प्रकाशन अपनी वेबसाइट पर करने का निर्णय लिया है ।

इसी क्रम में website पर कहानी संग्रह , काव्य संग्रह , ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित किया जाना प्रस्तावित है। रचानाकरारों और पाठकों का सहयोग सादर अपेक्षित है ।

प्रबन्ध समिति ,

www.kavyasagar.com

कवि परिचय

नाम	सुशीला जोशी
पिता	स्व काशीनाथ शर्मा
माता	स्व रामकली देवी
पति	डा आर डी जोशी
शिक्षा	M A हिंदी , अंग्रेजी , बी एड . संगीत प्रभाकर गायन , तबला , सितार , कथक
व्यवसाय	अंग्रेजी माध्यम आवासीय पब्लिक स्कूलों में शिक्षण व प्राचार्या ।
प्रकाशन	तीन काव्य संग्रह एक कहानी संग्रह एक आत्मकथा
अप्रकाशित	सात पांडुलिपि तैयार
सम्मान	अनेक पुरस्कारों के साथ हिंदी साहित्य संस्थान लखनऊ से " अज्ञेय " पुरस्कार 2009 में ।

परिचय

जग पूछ रहा मेरा परिचय
छल छदमि मादक बैनो से
मुझमे भौंडापन ढूंढ रहा
उत्सुक विस्फारित नैनो से ।

ऊषा की हु मुस्काहट
पंछी स्वर की मैं लहरी हूँ
स्वर्णिम रंग से विस्तारित
और आसमान से गहरी हूँ ।

धरती पर पसरा प्रकाश
मैं नील गगन की विस्तृतता
मैं इंद्रधुष की अंगड़ाई
जन जन मन हूँ आकुलता ।

बालक की हूँ शब्द शक्ति
और नेह प्यास की हूँ पहचान
जीवन की मै सार भक्ति हूँ
झूठ कपट से हूं अंजान ।

विश्व प्रेम का सागर हूँ
मैं मानव मन का आकर्षण
संस्कार की निर्माता
मैं दानव तन का संघर्षण ।

मैं हूँ चेतनता मानव तन की
उर धड़कन में है मेरा वास
भाव शक्ति मेरा स्वरूप है
दिग भरमाता मेरा हास् ।

जगसृष्टा की रचना हूँ मैं
साकार भाव की जननी हूँ
मानव संरचना की कर्त्री
आकार विश्व की करनी हूँ ।

कवि की मधुर कल्पना हूँ मै
मानव की पहली सन्तान
ब्रम्हा की मैं आद्या शक्ति हूँ
और गायक की पहली तान ।

मन में उमड़ी श्रद्धा हूँ मैं
घर घर में फैला विश्वास
रेशम के धागों से निर्मित
छद्मो से मैला आकाश ।

जग जननी हूँ उर्वरा शक्ति
मैं कामदेव की पालक हूँ
यम नियमो में बंधे विश्व के
आकर्षण की चातक हूँ ।

विष्णुचक्र की गति है मुझ में
राम धनुष का बांकापन
कृष्णवेणु संगीत से निसृत
पंचम स्वर मेरा बचपन ।

यौवन की पहली उमंग मैं
भावुकता की हूँ आधार
जगजीवन की हूँ तरंग मैं
आकर्षण की मैं आगार ।

महामाया मैं विश्वमोहनी
गंगा सी जीवन धारा
कुवृति की सहनशीलता
जलती लौ दीपक तारा ।

रूढ़ि की मैं एक श्रृंखला
परम्परा मेरा परिवेश
मर्यादा मेरा स्वरूप है
और स्वभाव नर का आदेश ।

सजनी भगनी परिचारिका
माँ का अद्भुत मिश्रण हूँ
क्षमा कुशलता कला सरलता
का आकर्षण कारण हूँ ।

तुम समीकरण यदि जग के हो
मैं वशीकरण उससे लिपटी
तुम जल जीवन यदि बीज रूप
मैं प्राण श्वास उसमे अटकी ।

अपनी हठ यदि आऊ तो
यमराज को वापस लौटाऊ
जब कर्मठ मैं हो जाऊं तो
शंकर धरती पर ले आऊँ ।

मैं सती साध्वी अनुसुइया
सूर्योदय मेरी शक्ति में
त्रिदेव का शैश्वपन भी तो
अविरल मेरी ही भक्ति में ।

मैं सती पार्वती कल्याणी
अपमान से आग में दहति हूँ
बन विरला सीता क्षत्राणी
मैं अगन परीक्षा सहती हूँ ।

मैं महिषासुर मर्दिनी हूँ
और ज्वाल कराल भी कहलाती
यदि पूर्ण क्रोध में आऊँ तो
नर देव नारायण भी दहलाती ।

गर कही उपेक्षा देखूं तो
धरती के अंक समा जाऊँ
अगर मुझे सम्मान मिले
जंगल में स्वर्ग रचा जाऊँ ।

हूँ युद्ध धरा की केकैयी में
और रक्षा कवच पति का हूँ
यम से मुक्ति दिलाने का
मैं उदाहरण सती का हूँ ।

मैं पीड़ा हूँ हर मानव की
और पीड़ा जीत के जन्मी हूँ
नर किन्नर ऋषि मुनि योगी
और अवतारों की जननी हूँ ।

सरला गृहणी मै कोमलांगी
नर मन में शर सम खलती हूँ
आशा साहस निश्चिन्त स्वास बन
उर में मैं अविरल चलती हूँ ।

मैं नर भगनी मै नर पोषक
मैं महाशक्ति नारायण की
मुनि योगी ऋषि तपस्वी की
आसक्ति जग पारायण की ।

मैं जगदाधार मानव इच्छा
जो चाह रूप में बसती हूँ
बुद्धि संकल्पों के मध्य
बस घुन जैसी ही पिसती हूँ ।

मैं जेल में सड़ती देवकी हूँ
फिर भी अच्युत को जनती हूँ
मैं रोती बिलखती कौशल्या
आशा आँखों से बुनती हूँ ।

मेरा स्वभाव एक खुली किताब
मैं पतित पावनी गंगा हूँ
सरला शर्मिष्ठा लज्जा मैं
और कामिनी रूप अनंगा हूँ ।

पाप पुण्य मुझमे गलते
परिभाषाएं मुझसे बनती
पशु शैतानी के जीवन की
आशाएं हैं मुझसे बंधती ।

मैं गृह शक्ति मैं अर्थ शक्ति
मैं ऐश्वर्यो की देवी हूँ
मैं रामेश्वरी मैं कामेश्वरी
जग विष्णु की सेवी हूँ ।

मैं जन्म रूप में ब्रम्हा हूँ
और मोहन रूप नारायण का
यदि रौद्र रूप हूँ शंकर का
तो सोऽहम रूप रामायण का।

मैं नर शक्ति मैं वर शक्ति
मैं प्राण शक्ति हूँ इस जग की
मैं साम दाम और भेद शक्ति
और दण्ड त्राण हूँ हर मग की ।

बादल की गोदी से निसृत
तप्त धरा पर शीतल वर्षा
सूरज के तीखे प्रहार से
त्रस्त हृदय देती सरसा ।

द्वितीया का मैं बाल चन्द्रमा
कोमलता का पहला हास
जन जन के जीवन की श्रद्धा
घर घर में पलता विश्वास ।

मैं दीपक की जलती बाती
और बाती की लौ हठी
चंदा का भीगा प्रकाश मैं
और दमकती रवि मणि ।

मैं राजाज्ञा मैं कालज्ञा
मैं आज्ञा मानव मन की हूँ
मैं स्व आज्ञा मैं ब्रम्हाज्ञा
मैं आज्ञा हर एक कण की हूँ ।

तुम ध्यानमार्ग के अनुयायी
मैं प्रेम मार्ग की दीवानी
तुम बन्धन में बढ़नेवाले
मैं मुक्त हुई राधा रानी ।

तुम ध्यानयोग के महावीर
मैं प्यार पिपासी उत्कंठा
आतंकित मुझसे पल पल
मैं मुक्तस्वरूपा रतिरंगा ।

मैं नेह रँगी पूरी डुबकी
तुम एक भगोड़े सन्यासी
तुम चटखे से आकाश सही
मैं नीलिमा नभ की हूँ राशी
।

मैं तू की विरोधी केवल मैं
जो मैं को मार के रखती हूँ
मैं केवल अपनी आहट से
कर देती पागल भक्षु हूँ ।

मैं वरद वरेण्या वरदायिनी
मैं मन विनोद का कारण हूँ
घर घर की ममता मंगल
मैं मनोरमा साधारण हूँ ।

तुम कामातुर पशु मानव के
मैं सहन शक्ति की महाशिला
मैं जन समाज का कोलाहल
और बंजर में फूल खिला ।

तुम छद्मो से निर्मित चेहरा
मैं रैन बसन्ती मधुमास
हो बलात्कार के हठी जनक
मैं ममता का हूँ खुला हास ।